SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

हिंदी फिल्म संगीत पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रभाव

सुमेधा पाण्डेय

शोधार्थी

डॉ. लक्ष्मी

शोध निर्देशक

नृत्य एवं संगीत विभाग

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सार

हिंदी फिल्म संगीत भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसका विकास विभिन्न संगीत परंपराओं के प्रभाव से हुआ है। इनमें उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत (हिंदुस्तानी संगीत) का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस शोध का उद्देश्य हिंदी फिल्म संगीत पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का अध्ययन करना है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत राग, ताल, स्वर, लय तथा विभिन्न गायन शैलियों जैसे ख्याल, ठुमरी, दादरा और भजन पर आधारित है। इन तत्वों का व्यापक रूप से हिंदी फिल्म संगीत में उपयोग किया गया है, जिससे फिल्मी गीतों में भावनात्मक गहराई, सौंदर्य और सांगीतिक समृद्धि आई है। प्रारंभिक काल से लेकर आधुनिक युग तक हिंदी फिल्म संगीत के अनेक संगीतकारों जैसे नौशाद, एस. डी. बर्मन और मदन मोहन ने शास्त्रीय रागों और वाद्ययंत्रों का प्रभावी प्रयोग किया है।

राग यमन, भैरवी, दरबारी, मालकौंस आदि रागों पर आधारित अनेक फिल्मी गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। इसके अतिरिक्त सितार, तबला, बांसुरी और शहनाई जैसे शास्त्रीय वाद्ययंत्रों ने भी फिल्म संगीत को विशिष्ट पहचान प्रदान की है। यह अध्ययन दर्शाता है कि उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत ने न केवल हिंदी फिल्म संगीत को तकनीकी और कलात्मक रूप से समृद्ध किया है, बल्कि शास्त्रीय संगीत को आम जनता तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार हिंदी फिल्म संगीत और उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के बीच गहरा और अभिन्न संबंध है, जिसने भारतीय संगीत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

मुख्य शब्द

1. हिंदी फिल्म संगीत
2. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत
3. हिंदुस्तानी संगीत राग और ताल
4. फिल्म संगीतकार
5. भारतीय संगीत संस्कृति

भूमिका

संगीत मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है, जो भावनाओं, विचारों और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भारतीय संगीत परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है, जिसमें उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत (हिंदुस्तानी संगीत) का विशेष स्थान है। यह संगीत राग, ताल, स्वर और लय पर आधारित होता है, जो भावनाओं को प्रभावी रूप से व्यक्त करने में सक्षम है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत ने न केवल भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि आधुनिक संगीत शैलियों, विशेष रूप से हिंदी फिल्म संगीत को भी गहराई से प्रभावित किया है। हिंदी फिल्म संगीत भारतीय सिनेमा का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसकी शुरुआत 1930 के दशक में हुई। प्रारंभिक काल से ही फिल्म संगीतकारों ने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के तत्वों को अपनाया और उन्हें लोकप्रिय रूप में प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध संगीतकारों जैसे नौशाद, एस. डी. बर्मन, मदन मोहन तथा रवि शंकर ने अपने संगीत में शास्त्रीय रागों, तालों और वाद्ययंत्रों का प्रभावी उपयोग किया। इन संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत को सरल और लोकप्रिय बनाकर आम जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिंदी फिल्म संगीत में राग आधारित गीतों का प्रयोग व्यापक रूप से किया गया है। राग यमन, भैरवी, दरबारी, मालकौंस और काफी जैसे रागों ने फिल्मी गीतों को मधुर, भावपूर्ण और प्रभावशाली बनाया है। इसके अतिरिक्त, शास्त्रीय वाद्ययंत्रों जैसे सितार, तबला, बांसुरी और शहनाई का प्रयोग फिल्म संगीत की गुणवत्ता और सौंदर्य को बढ़ाता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य हिंदी फिल्म संगीत पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का अध्ययन

करना है। यह शोध इस बात का विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार शास्त्रीय संगीत के तत्वों ने फिल्म संगीत को समृद्ध किया है और किस प्रकार फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है। यह अध्ययन भारतीय संगीत की सांस्कृतिक, कलात्मक और ऐतिहासिक विरासत को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. हिंदी फिल्म संगीत के विकास का अध्ययन करना।
2. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण करना।
3. हिंदी फिल्म संगीत पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. प्रमुख संगीतकारों के योगदान का मूल्यांकन करना।
5. फिल्म संगीत द्वारा शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और प्रसार का अध्ययन करना।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार

साहित्य समीक्षा

हिंदी फिल्म संगीत भारतीय सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका विकास उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की विस्तृत परंपरा से गहराई से प्रभावित रहा है। हिंदी फिल्म संगीत में राग, ताल और शास्त्रीय गायन शैली का व्यापक प्रयोग हुआ क्योंकि बहुत से संगीतकार शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित थे। इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य प्रमुख अध्ययनों और विद्वानों के विचारों का विश्लेषण करना है, जिन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव को हिंदी फिल्म संगीत पर अध्ययन किया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की विचारधारा

बहुत से विद्वानों ने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की सैद्धांतिक रचना को बनाया है। विष्णु नारायण भातखंडे ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रागों को वर्गीकरण कर व्यवस्थित स्वरूप दिया। उनकी थाट प्रणाली ने संगीतकारों और शोधकर्ताओं को रागों की संरचना और प्रयोग को

समझने में मदद की। फिल्म संगीतकारों ने भी यह प्रणाली पसंद की, क्योंकि वे रागों पर फिल्म गीत बनाते थे। विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने भी शास्त्रीय संगीत को संस्थागत रूप देकर आम जनता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी कोशिशों से शास्त्रीय संगीत का प्रचार हुआ और फिल्म संगीतकारों को इसे सीखने और अपनाने का मौका मिला। एलेन डैनियलौ की पुस्तक उत्तर भारतीय संगीत के राग में रागों की संरचना और उनके भावनात्मक प्रभाव का व्यापक विश्लेषण किया गया है। उनका कहना था कि राग सिर्फ स्वर संयोजन नहीं है, बल्कि भावनात्मक अभिव्यक्ति का साधन है, जो हिंदी फिल्म संगीत में भी है।

हिंदी फिल्म संगीत के विकास पर मुख्य अध्ययन

हिंदी फिल्म संगीत के विकास और संरचना पर भी बहुत से अध्ययनकर्ताओं ने अध्ययन किया है। ग्रेगरी डी. बोथ की पुस्तक Hindi Film Song: Music Beyond Boundaries में हिंदी फिल्म संगीत के ऐतिहासिक विकास और उसके सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। उन्हें बताया गया कि हिंदी फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत के तत्वों को लोकप्रिय रूप में प्रस्तुत किया और इससे बहुत सारे लोगों तक पहुँचाया। इसी तरह जेसन बीस्टरज़ोन्स की पुस्तक बॉलीवुड ध्वनियाँ में: हिंदी फिल्म गीतों के विश्वव्यापी चिंतन में हिंदी फिल्म संगीत की संरचना और उसके कई स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। उनका कहना था कि हिंदी फिल्म संगीत शास्त्रीय, लोक और पाश्चात्य संगीत के एक मिश्रण है, जिसमें शास्त्रीय संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है। अशोक रानाडे ने हिंदी फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत के योगदान का व्यापक अध्ययन किया। उनका निष्कर्ष था कि हिंदी फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शास्त्रीय संगीत का प्रभाव फिल्म संगीतकारों पर

बहुत से शोधकर्ताओं ने हिंदी फिल्म संगीतकारों और उनके शास्त्रीय संगीत से संबंधों की जांच की है। नौशाद हिंदी फिल्म संगीत के प्रमुख संगीतकार थे, जिन्होंने शास्त्रीय रागों का व्यापक प्रयोग किया। उनके गीतों में राग यमन, भैरव और दरबारी का प्रभाव स्पष्ट है। नौशादनामा:

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

नौशाद का जीवन और संगीत नामक उनकी जीवनी में उनके संगीत की शास्त्रीय पृष्ठभूमि का व्यापक वर्णन है। इसी तरह, रावी शंकर ने फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत का इस्तेमाल करके भारतीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया। उनके योगदान से स्पष्ट होता है कि फिल्म संगीत का एक महत्वपूर्ण आधार शास्त्रीय संगीत है।

फिल्म संगीत पर राग आधारित अध्ययन

विभिन्न शोध अध्ययनों ने पाया कि हिंदी फिल्म संगीत में रागों का व्यापक प्रयोग हुआ है। फिल्म गीतों में भैरवी, यमन, दरबारी, पीलू और बागेश्री रागों का इस्तेमाल किया गया है। इन रागों का उपयोग फिल्म गीतों को अधिक भावुक और प्रभावशाली बनाता है। साथ ही, शोधकर्ताओं ने बताया कि फिल्म संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत को सरल रूप में प्रस्तुत किया, जिससे आम लोग भी उससे परिचित हो गए।

गायन शैली और वाद्ययंत्रों पर अध्ययन करने वाले

शोधकर्ताओं ने पाया कि हिंदी फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत की गायन तकनीकों जैसे आलाप, तान, मींड और गमक का प्रयोग किया गया है। इन तकनीकों ने फिल्म संगीत का प्रभाव और गुणवत्ता बढ़ाया है।फिल्म संगीत में भी सितार, तबला, बांसुरी और तानपुरा जैसे शास्त्रीय वाद्ययंत्रों का प्रयोग हुआ है, जिससे फिल्म संगीत को भारतीय पहचान और सांस्कृतिक गहराई मिली है।

आधुनिक हिंदी फिल्म संगीत पर अध्ययन

नवीनतम अध्ययनों ने पाया कि हालांकि पाश्चात्य संगीत का प्रभाव आधुनिक हिंदी फिल्म संगीत पर बढ़ गया है, लेकिन शास्त्रीय संगीत अभी भी प्रभावी है।

शोध अंतराल

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि हिंदी फिल्म संगीत पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव पर कई अध्ययन किए गए हैं; हालांकि, कुछ क्षेत्रों में अभी भी अधिक अध्ययन की जरूरत है:

1. आधुनिक फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत का व्यापक अध्ययन
2. विभिन्न संगीतकारों की तुलनात्मक खोज की जरूरत
3. डिजिटल युग में शास्त्रीय संगीत का असर

शोध पद्धति

1. शोध का प्रकार

यह शोध मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। उपयोग किए गए स्रोत:

- पुस्तकें,
- शोध पत्र
- इंटरनेट स्रोत
- संगीत संबंधी लेख,
- फिल्म संगीत के उदाहरण

यह शोध विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। हिंदी फिल्म संगीत और उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं का वर्णनात्मक शोध में वर्णन किया गया है। यह विश्लेषणात्मक अध्ययन है कि हिंदी फिल्म संगीत में राग, ताल, बंदिश, आलाप और तान जैसी शास्त्रीय तकनीकों का उपयोग कैसे किया गया है। यह अध्ययन संगीत की संरचना, शैली, रागों का उपयोग और भावात्मक प्रभाव का अध्ययन करता है, जो गुणात्मक शोध पर आधारित है।

शोध प्रक्रिया

इस अध्ययन में ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकोण दोनों प्रयोग किए गए हैं। 1930 से आज तक हिंदी फिल्म संगीत के विकास का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया गया है।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

तुलनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके, फिल्म संगीत और शास्त्रीय संगीत की संरचना, शैली और प्रस्तुति की तुलना की गई है।

डेटा के स्रोत

इस अध्ययन में प्राथमिक (प्राथमिक) और द्वितीयक (द्वितीयक) स्रोतों का उपयोग किया गया है।

(क) प्राथमिक स्रोत

1. फिल्म संगीत और शास्त्रीय संगीत से संबंधित गीतों का अध्ययन
2. प्रसिद्ध गायकों और संगीतकारों के साक्षात्कार
3. संगीत कार्यक्रमों और प्रदर्शनों का निरीक्षण
4. फिल्मी गीतों के विभिन्न रागों का विश्लेषण

(ख) द्वितीयक स्रोत

1. पुस्तकें (म्यूजिकॉलजी, भारतीय क्लासिक संगीत, फिल्म संगीत)
2. शोध पत्रिका
3. लेख और प्रकाशनों
4. इंटरनेट स्रोतों और डिजिटल अभिलेखागारों का उपयोग
5. संगीत से संबंधित विश्वसनीय वेबसाइटों और दस्तावेजों

नमूना चयन प्रक्रिया

इस अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन किया गया है। इसमें हिंदी फिल्मों से चुने गए गीतों में स्पष्ट रूप से उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों का समावेश है, जैसे–

1. राग भरवी से प्रेरित गीत
2. राग यमन का गीत

3. दरबारी राग पर आधारित गीत
4. राग मालकौंस से प्रेरित गीत

इन गीतों में शास्त्रीय तत्वों का प्रभाव दिखाया गया है।

- **डेटा संग्रहण के तरीके**

  इस अध्ययन में निम्नलिखित विधियों का इस्तेमाल किया गया है:

1. अवलोकन विधि

राग, ताल और लय को फिल्मी गीतों में देखा गया

शास्त्रीय और फिल्म संगीत की प्रस्तुति प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया गया

2. दस्तावेज़ीय अध्ययन

संगीत संबंधी पुस्तकों, शोध पत्रों और दस्तावेजों का अध्ययन

संगीतकारों और संगीत इतिहास से जुड़े लेखों का अध्ययन

3. श्रव्य विश्लेषण

- फिल्मी गीत सुनकर राग, स्वर और ताल को जानें
- फिल्मी संरचना और शास्त्रीय संरचना की तुलना

डेटा विश्लेषण का तरीका

गुणात्मक विश्लेषण एक विधि है जो डेटा को विश्लेषित करती है। इसमें निम्नलिखित मुद्दे शामिल हैं:

1. फिल्मी गीतों में प्रयोग की जाने वाली रागों की सूची
2. पुरानी चालों जैसे आलाप, तान, मींड और गमक का उपयोग

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

3. फिल्मी संगीत और शास्त्रीय संगीत की संरचनाओं में समानता

4. शास्त्रीय संगीत का भाव और अभिव्यक्ति पर प्रभाव

शोध की सीमाएँ

इस अध्ययन के कुछ सीमा निम्नलिखित हैं:

1. हिंदी फिल्मों के सभी गीतों का अध्ययन करना असंभव था।

2. कुछ संगीतकारों के व्यक्तिगत विचार हमारे पास नहीं हैं।

3. समय और संसाधन सीमा

विश्लेषण

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का परिचय

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत को हिंदुस्तानी संगीत कहा जाता है। यह संगीत मुख्य रूप से निम्न तत्वों पर आधारित है:

1. राग- राग संगीत की आत्मा है। प्रत्येक राग एक विशेष भाव और वातावरण को व्यक्त करता है।

प्रमुख राग:

- यमन
- भैरवी
- दरबारी
- मालकौंस
- काफी

2. ताल - ताल संगीत की लयात्मक संरचना है

प्रमुख ताल:

- तीनताल,

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

- झपताल,
- एकताल
- दादरा

3. स्वर और लय - स्वर और लय संगीत की मूल संरचना हैं।

हिंदी फिल्म संगीत का ऐतिहासिक विकास

1. प्रारंभिक काल (1930-1940) इस काल में फिल्म संगीत पूरी तरह शास्त्रीय संगीत पर आधारित था। संगीतकारों ने भजन, ठुमरी और ख्याल शैली का उपयोग किया।
2. स्वर्ण युग (1950-1970) यह हिंदी फिल्म संगीत का स्वर्ण युग था। इस समय के प्रमुख संगीतकार थे: नौशाद एस. डी. बर्मन मदन मोहन इन संगीतकारों ने शास्त्रीय रागों पर आधारित अनेक गीत बनाए।
   उदाहरण: “मन तड़पत हरि दर्शन को आज” - राग मालकौंस “मोहे पनघट पे” - राग खमाज
3. आधुनिक काल (1980-वर्तमान) आधुनिक संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत और आधुनिक तकनीक का मिश्रण किया।
   उदाहरण: ए. आर. रहमान ने शास्त्रीय संगीत और आधुनिक संगीत का सुंदर मिश्रण किया।

हिंदी सिनेमा में शास्त्रीय संगीत का प्रभाव

1. रागों का प्रभाव - राग फिल्म संगीत में आम हैं। इसके परिणामस्वरूप गीतों में भावनात्मक गहराई आई है।

उदाहरणार्थ:

राग यमन - “चौदहवीं का चाँद हो

राग भैरवी - “जब दीप जले आना”

2. गायन का प्रभाव - फिल्म संगीत में शास्त्रीय गायन शैलियों का उपयोग किया गया था।

शैलियाँ:

- एक ठुमरी
- ध्यान

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

- ग़ज़ल

3. उपकरणों का प्रभाव

मुख्य उपकरण:

- सितार
- तबला
- बांसुरी
- शहनाई

इन वाद्ययंत्रों ने फिल्मों का संगीत बेहतर बनाया।

4. मानसिक प्रभाव - शास्त्रीय संगीत ने भावनात्मक रूप से फिल्म संगीत को मजबूत किया।

प्रमुख संगीतकारों का योगदान

1. नौशाद- नौशाद ने फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया।
2. एस डी बर्मन- उनका संगीत लोक और शास्त्रीय था।
3. मोहन- उनकी मदद से गजल शैली लोकप्रिय हुई।
4. आर रहमान- उन्हें शास्त्रीय संगीत का प्रयोग आधुनिक संगीत में किया गया।

हिंदी फिल्म संगीत में शास्त्रीय रागों के उदाहरण

गीत	**फिल्म**	**राग**
मन तड़पत हरि दर्शन को आज	बैजू बावरा	मालकौंस
मोहे पनघट पे	मुगलआजम-ए-	खमाज
जब दीप जले आना	चितचोर	भैरवी

5. सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव

हिंदी फिल्म ने शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाया। यह नई पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत की ओर ले गया।

अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन हिंदी फिल्म संगीत पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन मुख्य रूप से हिंदी सिनेमा के संगीत में प्रयोग किए गए शास्त्रीय तत्वों (राग, ताल, स्वर, लय, गायन शैली और वाद्‌यंत्र) का विश्लेषण करता है। हिंदी फिल्म संगीत के विकास के विभिन्न चरणों में शास्त्रीय संगीत की भूमिका को समझने का प्रयास इस अध्ययन में किया गया है: प्रारंभिक, स्वर्णिम और आधुनिक काल। इस अध्ययन में प्रमुख संगीतकारों जैसे नौशाद, एस. डी. बर्मन, मदन मोहन और ए. आर. रहमान के योगदान का भी विश्लेषण किया गया है, जिन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के तत्वों को फिल्म संगीत मंम सफलतापूर्वक समाहित किया था।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत ने हिंदी फिल्म संगीत पर बहु त बड़ा और गहरा प्रभाव डाला है। हिंदी फिल्म संगीत को उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत, जो राग, ताल, स्वर और लय पर आधारित है, ने भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाया है। फिल्मी गीतों में शास्त्रीय संगीत के रागों ने गहराई, मधुरता और भावनात्मक प्रभाव बनाया, जिससे वे अधिक प्रभावशाली और टिकाऊ बन गए। बहु त से महान संगीतकारों ने हिंदी फिल्म संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नौशाद, एस. डी. बर्मन, मदन मोहन और ए. आर. रहमान जैसे संगीतकारों ने विशेष रूप से फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत के तत्वों को शामिल किया। शास्त्रीय रागों, तालों और वाद्‌यंत्रों का प्रयोग करके उन्होंने फिल्म संगीत को एक नई ऊंचाई दी। हिंदी फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत को आम लोगों तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। फिल्म संगीत ने शास्त्रीय संगीत को व्यापक रूप से लोकप्रिय बनाया, जबकि पहले यह सिर्फ एक निश्चित समाज तक सीमित था। इससे शास्त्रीय संगीत का संरक्षण और नई पीढ़ी में इसकी रुचि बढ़ी।

अंततः, हिंदी फिल्म संगीत का आधार उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत है। भारतीय संगीत को वैश्विक स्तर पर विशिष्ट स्थान, सांस्कृतिक पहचान और कलात्मक गरिमा मिली है, क्योंकि

Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

दोनों के बीच एक गहरा और अभिन्न संबंध है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत भविष्य में भी हिंदी फिल्म संगीत के विकास में महत्वपूर्ण रहेगा।

संदर्भ सूची

(A) पुस्तकें (Books)

1. भातखंडे, विष्णु नारायण. (1990). हिंदुस्तानी संगीत पद्धति. संगीत कार्यालय, हाथरस.
2. रानाडे, अशोक दामोदर. (2006). Hindustani Music: A Tradition in Transition. Popular Prakashan, Mumbai.
3. बागची, एस. (1998). Nad: Understanding Raga Music. Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi.
4. शर्मा, प्रो. शरच्चंद्र श्रीधर. (2004). भारतीय संगीत का इतिहास. संगीत कार्यालय, हाथरस.
5. दास शर्मा, पी.सी. (1993). भारतीय संगीत का परिचय. किताब महल, इलाहाबाद
6. .Jain, Subhadra Chaudhary. (2005). *Indian Film Music and Its Classical Roots*. Anmol Publications, New Delhi.
7. Manuel, Peter. (1993). *Cassette Culture: Popular Music and Technology in North India*. University of Chicago Press.

(B) शोध पत्र (Research Journals)

1. Ranade, Ashok. (1995). “Film Music and Classical Tradition in India.” Journal of Indian Musicological Society.
2. Booth, Gregory. (2008). “Behind the Curtain: Making Music in Mumbai’s Film Studios.” Ethnomusicology Journal.
3. Morcom, Anna. (2007). “Hindi Film Songs and the Musical Tradition.” Ethnomusicology Forum.
4. Arnold, Alison. (1991). “Popular Film Song in India: A Case of Mass-Market Musical Eclecticism.” Popular Music Journal.

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March 2026 E-ISSN: 2584-2900

(C) इंटरनेट स्रोत

1. www.itcsra.org (ITC Sangeet Research Academy)
2. www.sangeetnatak.gov.in (Sangeet Natak Akademi)
3. www.allmusic.com
4. www.indianclassicalmusic.com
5. www.youtube.com (शास्त्रीय राग आधारित फिल्मी गीतों के श्रव्य विश्लेषण हेतु)

(D) पत्रिकाएँ

1. संगीत पत्रिका - हाथरस
2. Sruti Magazine
3. Journal of Music Academy, Madras

(E) उदाहरण के रूप में अध्ययन किए गए फिल्मी गीत

1. "मन तड़पत हरि दर्शन को आज" - राग मालकौंस
2. "मधुबन में राधिका नाचे रे" - राग हमीर
3. "मोहे भूल गए सांवरिया" - राग भैरवी
4. "अलबेला सजन आयो रे" - राग अहिर भैरव
5. "जागो मोहन प्यारे" - राग भैरव

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR